Scan once again

18-11-67 ओम् शान्ति रात्री क्लास

बच्चों को समझाया गया है इस सीड़ी में भी है कि पुजारी और पूज्य। जब पूज्य हैं तो पुजारी नहीं है। पवित्र हैं तो पतित नहीं है। पतित है तो पावन नही है। भक्त है तो ज्ञानी है नहीं। ज्ञानी है तो भक्त नहीं। सदगति है तो गुरु होते नहीं। दुरगति में अनेक गुरु होते है। ऐसे ऐसे टोटके निकालनें चाहिये। तुम्हारे काम आवेगे। शंकरा चार्य समझता है हम पावन हैं। तुम कहते हो कि पतित दुनिया है तो पावन हो कैसे सकते है। श्रेष्टा चारी कोई हो नहीं सकता। जब कोई भी विकार है तो तुम बच्चे जानते हो कि पूज्य पुन्य आत्माओं की दुनियां में विकार होता नहीं। किसको पता नहीं है तो यह लिखना चाहिये कांट्रास्ट में। कि यह है तो यह नहीं। उस में है कि भगवान ऐसे कहते है और मनुष्य ऐसे कहते है। जब श्रेष्टा चारी है तो भ्रष्टा चारी एक भी नहीं। अगर भ्रष्टा चारी है तो श्रेष्टा चारी एक भी नहीं हो सकता। यह सब बातें और कोई जानते नहीं। ना कोई उस समय अपने को भ्रष्टा चारी या पतित समझते है। तुम बैठ समझाते हो सतयुग में भ्रष्टाचारि हो नहीं सकते। कलियुग और द्वापर मे कोई श्रेष्टाचारि हो नहीं सकता। ऐसे छपा कर बड़े अक्षरों मे प्रदर्शनी में लगा देना चाहिये। यह कान्ट्राष्ट खास लिखा हुआ हो। भ्रष्टा चारी है तो कोई श्रेष्टा चारी हो नहीं सकता। बहुत बातें है जिनको मनुष्य जानते नहीं। तो ख्याल करना चाहिये कि ऐसे लिखो जो मनुष्य समझे। कोई समय तो सन्यासी उदासी आद भी देखने आवेगे। लिख दो परम पिता त्रिमूर्ती शिव भगवानों वाचय जरूर भगवानों वाचय ब्रह्मा द्वारा ही होगा। त्रिमूर्ती शिव भगवानों वाचय ठीक रीती से लिखना चाहिये। जिससे मनुष्य साफ पढ़ कर समझ ले। राईट लिख कर बाबा को भेज देना चाहिये। करेक्शन तो होती ही है। ऐसे अक्षर लिखो जो मनुष्य अच्छी रीत समझ जायें। सतयुग त्रेता में रावण ही नहीं। यहां रावण राज्य में सब विष्यंस है। वहां विष्यस कोई होते नहीं। ऐसे ऐसे टोटके लिखना बहुत जरूरी है। बच्चों को विचार सागर मथन कर ऐसे ऐसे लिखना चाहिये। विद्वान आचार्य आद आते तो है ना। परन्तु इन्हों को अहंकार बहुत रहता है। जहां पूज्य है वहां पुजारि होने असम्भव है। जहां पूज्य हैं वहां पुजारि होने असम्भव है। जो समझदार है वह ही अच्छी रीत लिख सकेगे। वे समझ थोड़ा ही लिख सकेगे। यह तो बहुत जरूरी है कि जहां पूज्य है वहां पुजारि हो नहीं सकते। ऐसे ऐसे अक्षर लिख बाबा को दिखावे। फिर बाबा लिख देगे कि ऐसे लिखो। जो मनुष्य समझ जाये। नई दुनियां और पुरानी दुनियां में अन्तर कितना है।

19-11-67 रात्री क्लास

******************* बाबा का विचार है यह जो अपना त्रिमूर्ती है लिखत सहित बाबा समझाते है कि गीता का भगवान कृष्ण नहीं है शिव है। इनका भी चित्र जैसे बन कर आया है। अब अखबार में तो इतने बड़े नही डलते। अक्षर भी पतले होते है। बाबा को अखबार का कालम बना कर दो। और बलाक बनाना पड़ेगा। त्रिमूर्ती का बलाक है क्लीयर। इसके नीचे जो लिखना है जरूर। अखबार तो सब किस्म की छप पड़ते है। बाबा का विचार है कि जांच करनी चाहिये। कान्ट्रेक्ट किया जाता है कि इतने हजार इतने इंच लेगें। फिर जब जो देवें अखबार एक दोक मुख्य है। दो तीन बड़े ले लेवे जो ऐसे कब कब अखबार में डालते रहै। जो बिना देचा चलने लग पड़ते है। इस में तो कुछ है नहीं बाबा तो समझाते रहते है कि यह यह डालो। वा तो अपनी अखबार निकालो हिम्मत करके। जो चाहिये सो करो। बाप तो राईट ही सिखलाते है। जैसे नामी से नहरू निकला वैसे तुम भी लिख सकते हो। विष्नु की नाभी कमल से ब्रह्मा निकला। लिखते तो बहुत है। तो अखबार भी नि निकले बड़2 दो चार सेन्टर भी खुल जाये तो कोई जोर लगाये बना सकेगे। उड़ाने करने का। ऐसे ऐसे ख्याल चलने चाहिये। अखबार से भी प्रभाव निकलेगा2 बाबा ऐसे देते है कि यह करना चाहिये। फिर बच्चों को प्रदर्शनी कमेटी को खड़ा होना चाहिये। जो अब तक सोये पड़े है। ध्यान नहीं देते है कि बाबा का क्या विचार है। सोया न रहना चाहिये। कुछन कुछ ठीक करना चाहिये। तुम्हारे पास तो सत्य ही सत्य है। सत्य का भी ऐडवो-टाईज़म चाहिये ना। बच्चे अभी इतने तीखे नहीं हुए है। सम्पूर्ण तो नहीं बने है ना। देखने में आता है कि कुछ तीखा पुरुषार्थ होना चाहिये। ऐसे ऐसे कुछ करो तो नाम जास्ती होवे बाहर में। बाबा सब के लिये लिये

कहते है। कई बच्चे सर्विस का शौक रखते है तो कोई ठंडे पड़ जाते है। कोई बात में नाराज हुए तो कोई ने न सुनी तो बस छोड़ देते है। बाबा कुछ कहते है तो फिर फीलिंग आ जाती है। बाप का तो हक है कि कुछ भी समझाये सकते है। मेजोरटी में भी कहते है कि बच्चे ठंडे हैं। एक दो में रख नहीं देते है। शेर बकरी इकट्ठे जल पीते है। सतयुग में। वह अवस्था अभी यहां हुई नहीं है। गायन है कि बाबा चाहे प्यार करो चाहे ठुकराओ चाहे कुछ भी करो। परन्तु वो अवस्था है नहीं। वो नशा बाप दादा का वा वफादारी का लव है बहुत कम। जब आगे चले तब पका हो। बाबा तो सब के लिये कहते है। पाई पैसे की बात में रूठ पड़ते है। कोई की परीक्षा लेवें तो भी भर पड़ते है। रहना तो या इस तरफ है या उस तरफ है। जैसे कि किनारे पर खड़े है। थोड़ा कहो तो गिरे खूह में। इसलिये बाबा बड़े शान्त से काम लेते है। कम बोलना अच्छा है। सुनते होते भी कुछ बोलेगे नहीं। चुप रहते हैं। क्योंकि अवस्था बिलकुल नाजुक है। थोड़ा कहो तो यह गिरे। बाबा फिर समझाते है कि अच्छा ना लगेगा। किसी की ग्लानी सुननी पसंद ना करेगे। कोई तो बहुत खुशी से सुनते हैं। जिससे दिल खराब होके सुननी न चाहिये। परन्तु कितना भी समझाओ सुधरते नहीं है। एक कान से सुनी तो दूसरे से निकाल दी। हर बात में बाप को समझाना पड़ता है। बाप आये हैं पतितो को पावन बनाने। यह तो बच्चे समझते हैं कि 99% भी सजा खाते है। बाकी एक प्रतिशत रहता है। एक प्रतिशत भी नहीं तो सतयुग में न जा सकें। राजधानी स्थापन होनी है। एक प्रतिशत भी पास हो तो स्वर्ग में चले जावेगे। परन्तु पद क्या पावेगे अविनाशी ज्ञान है ना। बाबा तो कहे कि एम आबजेक्ट यह देखो। ऐसे नहीं कि इनके आगे आखे बंद कर दो। टीचर तो कहेगे कि अच्छा पास होके। यहां निन्दा वा डिग्रेड की बात नहीं। जानते है कि कल्प पहले जितना लिया उतना ही लेगे। ड्रामा की बात है नहीं। डिनायस्टी स्थापन हो रही है। बहुत बड़ा क्लास है। बहुत फर्क पड़ जाता है। कहां राजा फिर कम का पद है तो है तो सही ना। पूरा ना पढ़ने से कम पद हो जाता है। बाप कहेगे कि पुरुषार्थ कर कुछ ना कुछ मार्कस लो। अपना पद अच्छा बनाओ। कईयों का तो पद रखना ही फलतु हो जाता है। क्या करेगे? बाप पुरुषार्थ तो कराते है डिटी डायनेस्टी तो बनानी है। पहले पहले पुरुषार्थ कर विकर्मा जीत बनो फिर जो होना होगा सो होगा। सतो प्रधान तो बनो ना। यह लव नं० अभी नहीं है। फिर सतो प्रधान बनना है। पुनर जन्म भी यह ही लेते है आत्मा कहां जावेगी नहीं। जितना पुरुषार्थ करेगे आत्मा वही 84 जन्म भी वही लेती हैं। आत्मा कब भी विनाश नहीं होती है। थोड़ा सा भी ज्ञान सुन कर चली जाती है। इनका जैसे कि हिसाब ही नहीं है। ऐसे नहीं कि बाबा को देखेगे नहीं। ऐसे बहुत आते और चले जाते होगे। बाबा कहते है कि अविनाशी ज्ञान का विनाश कब होता नहीं है। यह डायनेस्टी बहुत बड़ी है। बाबा सब से मिल भी नहीं सकते। देख भी नहीं सकते। न इतना पुरुषार्थ ही कर सकते है। इस ज्ञान को स्मर्ण करने से इस में बहुत समझने की बातें है। जहां भी होवो वहां विचार सागर मथन करते रहो। अच्छी रीत पढ़ने वाले दिल पर चढ़ते है। नाम बाला भी इनका ही होता है। यह सब ख्यालात बच्चों को रखने है। सर्विस भी बढ़ानी है। सर्विस समाचार भी आता है। बहुत सर्विस करके भी गिर पड़ते हैं। तो भी जो थोड़ी सर्विस करते है उनसे तो ऊंच पद पावेंगे। तुम बच्चों को गुप्त कितना माल मिल रहा है। दुनियां को थोड़ा ही पता है। तुम्हारी मेहनत निश्फल नहीं होती। कब न कब आ जावेगे। इस ज्ञान मार्ग मे सरलता धैर्य बहुत चाहिये। बाबा सदेव कहते है कि छी छी बात हो तो हियर नो इविल टाक नो इविल। मीठा सहन शील बनना चाहिये। कोई चीज न मिले तो गुस्से में अण्डा जल जावेगा ऐसे भी न होना चाहिये। यह सब अनेक प्रकार की अवस्थाये है। चलन बहुत अच्छी चाहिये। एक दसे को विगाड़ दिल खराब न हो जाना चाहिये। औगन सब निकाल गुनवान बनना चाहिये। हर बात में गुण उठाना चाहियम। बड़ी मंजिल है। अच्छा

मीठे-मीठे सिकि लध्दे बच्चे को रुहानी बाप वा दादा का याद प्यार और गुड नाईट।